॥ श्री गणेशाय नमः॥

शनि (शनैश्चर)

शनि का स्वरूप :- शनि का वर्ण कृष्ण है। शनैश्चर की शरीर-कान्ति इन्द्रनीलमणि के समान है। इनके सिर पर स्वर्णमुकुट गले में माला तथा शरीर पर नीले रंग के वस्त्र सुशोभित हैं। ये गीध पर सवार रहते हैं इनका रथ लोहे का बना हुआ है। गथों में क्रमशः धनुष, बाण, त्रिशूल और वरमुद्रा धारण करते हैं।

शनि भगवान् सूर्य तथा छाया (संवर्णा) के पुत्र हैं। इनका विवाह चित्ररथ की कन्या से हुआ, इनकी पत्नि सती-साध्वी और परम तेजस्विनी थी। पत्नि के शाप के कारण इनकी दृष्टि में क्रूरता है,

शनि ग्रह :- मकर और कुम्भ राशि का स्वामी है, तुला के २० अंश पर उच्च तथा मेष के २० अंश पर नीच का होता है। मूलत्रिकोण राशि कुम्भ है। महादशा १९ की होती है। शनि ३६ वें वर्ष में भाग्योदय कारक होता है।

शनि ग्रह :- गोचर में जन्म राशि से ३, ६ और ११ वें स्थानों में शुभफलदायक तथा १, २, ४, ५, ७, ८, ९, व १० वें स्थान में साधन-हानि, विरोध, कार्यनाश आदि असुभ फलदायक होता है और ४, ८, १२ में विशेष कष्टदायक होता है।

शनिवार व्रत विधि :- शनिवार के दिन प्रातः सूर्योदय से पहले ब्रह्ममुहुर्त में उठकर नित्यकर्म करने के बाद शनि स्तोत्र का पाठ और शनि मन्त्र का यथाशक्ति जप करे, जप के लिए माला शमी या रुद्राक्ष की होनी चाहिए। सूर्यार्घ्य प्रदान कर, दिन में १२ से ३ बजे के अन्दर हल्दी-नमक रहित खिचड़ी का भोजन करे। सूर्यास्त के बाद अन्न जल ग्रहण न करे। रविवार के दिन सूर्यार्घ्य देने के बाद व्रत का पारण करना चाहिए।

शनि की अनुकूलता के लिए मृत्युंजय-जप करना चाहिये।

दान पदार्थ :- नीलम, तिल, उड़द, तैल, कृष्ण वस्त्र, कुलथी, लोहा, भैंस, कालीगाय, कस्तूरी, कृष्णपुष्प, स्वर्ण, वरण, दक्षिणा आदि।

धारणार्थ रत्न :- नीलम।

धारणार्थ औषधि :- शमी मूल।

देवता :- शनि ग्रह के अदिदेवता प्रजापति ब्रह्मा और प्रत्यधिदेवता यम हैं।

ध्यान :- नीलाम्बरः शूलधरः किरीटी गृध्रस्थितः शस्त्रधरो धनुष्मान्।
चतुर्भुजः सूर्यसुतः प्रशान्तः सदास्तु मह्यं वरदोस्तु नित्यम्॥
(इन्द्रनीलद्युतिः शूली वरदोगृध्रवाहनः। बाणबाणासनधरः कर्तव्योऽर्कसुतस्तथा॥)

३३ शनि यन्त्रम्

१२	७	१४
१३	११	९
८	१५	१०

तन्त्रसारोक्त मन्त्र :- ॐ शँ शनैश्चराय नमः। जपसंख्या २३,०००

तन्त्रोक्त बीजमन्त्र :- ॐ प्राँ प्रीँ प्रौँ शनये नमः।

बीजमन्त्र (पञ्जिका):- ॐ ऐँ ह्रीँ स्त्रौँ शनैश्चराय नमः।

शनि गायत्री :- ॐ भगभवाय विद्महे मृत्युरूपाय धीमहि तन्नो शनिः प्रचोदयात्।

पौराणिक जप मन्त्र :- नीलाञ्जनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम् ।
छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्॥

वैदिकमंत्र विनियोग [१]:- शन्नोदेवीरिति मन्त्रस्य दध्यङ्गाथर्वणऋषिः गायत्रीछन्दः शनिर्देवता आपो बीजम् वर्तमान इति शक्तिः शनैश्चर प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

अथ न्यास [२]:- ॐ दध्यङ्गथर्वणऋषये नमः शिरसि।
ॐ गायत्रीछन्दसे नमः मुखे।
ॐ शनैश्चरदेवतायै नमः हृदये।
ॐ आपोबीजाय नमः गुह्ये।
ॐ वर्त्तमानशक्तये नमः पादयोः।

करन्यास [३]:- ॐ शन्नोदेवीरित्यङ्गुष्ठाभ्यां नमः।
ॐ अभिष्टये तर्जनीभ्यां नमः।
ॐ आपोभवन्तु मध्यमाभ्यां नमः।
ॐ पीतये अनामिकाभ्यां नमः।
ॐ शंय्योरिति कनिष्ठिकाभ्यां नमः।
ॐ अभिस्त्रवन्तुनः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यास [४]:- ॐ शन्नोदेवीरिति हृदयाय नमः।
ॐ अभिष्टये शिरसे स्वाहा।
ॐ आपो भवन्तु शिखायै वषट्।
ॐ पीतये कवचाय हुम्।
ॐ शंय्योरिति नेत्रत्रयाय वौषट्।
ॐ अभिस्त्रवन्तुनः अस्त्राय फ़ट्।

वैदिक जप मन्त्र :- ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं य्योरभि स्त्रवन्तु नः॥
॥ ॐ शनिश्चराय नमः॥

श्रीशनैश्चरस्तोत्रम्

विनियोग- अस्य श्रीशनैश्चरस्तोत्रस्य दशरथ ऋषिः शनैश्चरो देवता, त्रिष्टुप्छन्दः शनैश्चरप्रीत्यर्थे पाठे विनियोगः।

दशरथ उवाच-

कोणोऽन्तको रौद्रयमोऽथ बभ्रुः कृष्णः शनिः पिंगलमन्दसौरिः।
नित्यं स्मृतो यो हरते च पीडां तस्मै नमः श्री रविनन्दनाय॥१॥
सुरासुराः किंपुरुषोरगेन्द्रा गन्धर्वविद्याधरपन्नगाश्च।
पीड्यन्ति सर्वे विषमस्थितेन तस्मै नमः श्री रविनन्दनाय॥२॥
नरानरेन्द्राः पशवो मृगेन्द्रा वन्याश्च ये कीटपतंगभृंगाः।
पीड्यन्ति सर्वे विषमस्थितेन तस्मै नमः श्री रविनन्दनाय॥३॥
देशाश्च दुर्गाणि वनानि यत्र सेनानिवेशाः पुरपत्तनानि।
पीड्यन्ति सर्वे विषमस्थितेन तस्मै नमः श्री रविनन्दनाय॥४॥
तिलैर्यवैर्माषगुडान्नदानैर्लोहेन नीलाम्बरदानतो वा।
प्रीणाति मन्त्रैर्निजवासरे च तस्मै नमः श्री रविनन्दनाय॥५॥
प्रयागकूले यमुनातटे च सरस्वतीपुण्यजले गुहायाम्।
यो योगिनां ध्यानगतोऽपि सूक्ष्मस्तस्मै नमः श्री रविनन्दनाय॥६॥
अन्यप्रदेशात्स्वगृहं प्रविष्टस्तदीयवारे स नरः सुखी स्यात्।
गृहाद्गतो यो न पुनः प्रयाति तस्मै नमः श्री रविनन्दनाय॥७॥
स्रष्टा स्वयंभूर्भुवनत्रयस्य त्राता हरीशो हरते पिनाकी।
एक स्त्रिधा ऋग्यजुःसाममूर्तिस्तस्तै नमः श्री रविनन्दनाय॥८॥
शन्यष्टकं यः प्रयतः प्रभाते नित्यं सुपुत्रैः पशुबान्धवैश्च।
षठेत्तु सौख्यं भुवि भोगयुक्तः प्राप्नोति निर्वाणपदं तदन्ते॥९॥

कोणस्थः पिङ्गलो बभ्रुः कृष्णो रौद्रोऽन्तको यमः। सौरिःशनैश्चरो मन्दः पिप्पलादेन संस्तुतः॥१०॥
एतानि दश नामानि प्रातरुत्थाय यः पठेत्। शनैश्चरकृता पीडा न कदाचिद्भविष्यति॥११॥

॥ इति श्रीब्रह्माण्डपुराणे श्रीशनैश्चरस्तोत्रम् समपूर्णम्॥

श्रीशनिकवचम्

अस्य श्रीशनैश्चरकवचस्तोत्रस्य कश्यपऋषिः अनुष्टुप्छन्दः शनैश्चरोदेवता श्रीशक्तिः श्रूँ कीलकं शनैश्चरप्रीत्यर्थे पाठे विनियोगः।

नीलाम्बरो नीलवपुः किरीटी गृध्रस्थितस्त्रासकरो धनुष्मान्।
चतुर्भुजः सूर्यसुतः प्रशान्नः सदा मम स्याद्वरदः प्रशान्तः॥१॥

ॐ श्रीशनैश्चरः पातु भालं मे सूर्यनंदनः। नेत्रे छायात्मजः पातु पातु कर्णौ यमानुजः॥४॥
नासां वैवस्वतः पातु मुखं मे भास्करः सदा। स्निग्धकण्ठश्च मे कंठं भुजौ पातु महाभुजः॥५॥
स्कंधौ पातु शनिश्चैव करौ पातु शुभप्रदः। वक्षः पातु यमभ्राता कुक्षिं पात्वसितस्तथा॥६॥
नाभिम् ग्रहपतिः पातु मन्दः पातु कटिं तथा। ऊरू ममांतकः पातु यमो जानुयुगं तथा॥७॥
पादौ मन्दगतिः पातु सर्वांगं पातु पिप्पलः। अङ्गोपाङ्गानि सर्वाणि रक्षन्मे सूर्यनन्दन॥८॥
इत्येतत्कवचं दिव्यं पठेत्सूर्यसुतस्य यः। न तस्य जायते पीडा प्रीतो भवति सूर्यजः॥९॥
व्ययजन्मद्वितीयस्थो मृत्युस्थानगतोऽपि वा। कलत्रस्थो गतो वापि सुप्रीतस्तु सदा शनिः॥१०॥
अष्टमस्थे सूर्यसुते व्यये जन्मद्वितीयगे। कवचं पठते नित्यं न पीड़ा जायते क्वचित्॥११॥
इत्येतत्कवचं दिव्यं सौरेर्यन्निर्मितं पुरा। जन्मलग्नस्थितान्दोषान्सर्वान्नाशयते प्रभुः॥१२॥

॥ इति श्रीब्रह्माण्डपुराणे ब्रह्मनारदसंवादे शनैश्चरकवचं सम्पूर्णम्॥

- -

[१] **विनियोग--** विनियोग करते समय एक छोटे ताम्बे के चम्मच या खर या आम के पत्ते से लुटिया में से गंगाजल युक्त पानी उठाए रखे और विनियोग के मन्त्र का अन्तिम शब्द "**विनियोगः**" बोलते समय चम्मच का पानी एक छोटी प्याली या प्लेट में उडल दे इस चम्मच को "**आचमनी**" कहते हैं।

[२] **अथ न्यासः** --तत्त्व मुद्रा से अर्थात् मध्यमा, अनामिका और अंगुष्ठ के अग्र भाग को मिलाकर सिर आदि का स्पर्श करे।

ॐ .... नमः शिरसि।

ॐ .... नमः मुखे।

ॐ .... नमः हृदये।

ॐ .... नमः गुह्ये।

ॐ .... नमः पादयोः।

[३] **करन्यासः** करन्यास एक ही समय में दोनो हाथों से करे।

ॐ ....ऽङ्गुष्ठाभ्यां नमः। (तर्जनी द्वारा अँगुठे के मूल से अग्रभाग तक स्पर्श करे)

ॐ .... तर्जनीभ्यां नमः। (अँगुठे से तर्जनी के मूल से अग्रभाग तक स्पर्श करे)

ॐ .... मध्यमाभ्यां नमः। (अँगुठे से मध्यमा के मूल से अग्रभाग तक स्पर्श करे)

ॐ ....ऽनामिकाभ्यां नमः। (अँगुठे से अनामिका के मूल से अग्रभाग तक स्पर्श करे)

ॐ .... कनिष्ठिकाभ्यां नमः। (अँगुठे से कनिष्ठिका के मूल से अग्रभाग तक स्पर्श करे)

ॐ .... करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। (हथेलियों और उनके पृष्ठ भागों का परस्पर स्पर्श करे)

[४] **हृदयादिन्यासः** दाहिने हाथ की पांचो अंगुलियों से हृदय आदि का स्पर्श करे।

ॐ .... हृदयाय नमः।

ॐ .... शिरसे स्वाहा।

ॐ .... शिखायै वषट्।

ॐ .... कवचाय हुम्। (दोनों भुजा अर्थात् कन्धे के पास स्पर्श करे)

ॐ .... नेत्रत्रयाय वौषट्। (दोनों नेत्रों और फिर ललाट के मध्य भाग का स्पर्श करे)

ॐ ....ऽस्त्राय फ़ट्। (दायें हाथ को सर के ऊपर बायीं ओर से पीछे ले जाकर सर के दायीं ओर से आगे की ओर लाये, फिर बायीं हाथेली पर दायें हाथ की तर्जनी और मध्यमा अंगुलियों से ताली बजाये)